Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

विश्व सहभागिता रविवार 2019

आराधना के लिए मार्गदर्शिका

लैटिन अमरीका और कैरेबियन के एमडब्ल्यूसी सदस्यों के द्वारा 20 जनवरी 2019 की आराधना के लिए तैयार की गई मार्गदर्शिका

1. मूल विषय और शास्त्रपाठ

अ. मूल विषय:

पथिकों के साथ न्याय का व्यवहार: पलायन और ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट इतिहास

यह मूल विषय 2019 के लिए एमडब्ल्यूसी *रिन्यूवल 2027* के मूल विषय और विश्व शान्ति रविवार 2018 के मूल विषय से जुड़ा हुआ है।

ब. इस मूल विषय को क्यों चुना गया:

लगभग 500 वर्ष पूर्व, ऐनाबैपटिस्ट लोगों को इसलिए सताया गया क्योंकि वे दावा करते थे कि वे मूलत: परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं। कुछ ही समय पूर्व लैटिन अमरीका और कैरेबियाई देशों में ऐनाबैपटिस्ट लोगों ने अपनी उपस्थिति के 100 वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर उत्सव मनाया। सबसे पहले इन देशों में मिशनरी लोग आए, उसके बाद बड़ी संख्या में पलायन करने वाले लोग अपने मूलस्थानों को छोड़ कर आए, और फिर नवस्थापित कलीसियाओं के द्वारा मिशन की स्थापना की गई।

लैटिन अमरीका इन दिनों एक विकराल विस्थापन संकट से गुजर रहा है, यहाँ व्याप्त पूर्वनियोजित अपराध, हिंसा और गरीबी ने हजारों की संख्या में लोगों को बाध्य कर दिया है कि वे अपने अपने घरों को छोड़ कर भाग जाएं। पलायन करने वाले लोग, जिनमें ऐनाबैपटिस्ट भी शामिल हैं, सुरक्षा की तलाश में बहुत ही कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। जोखिम में पड़े इन लोगों के बीच पहुँच कर हमारी कलीसियाएं इनके लिए कार्य कर रहीं हैं।

स. बाइबल पाठ:

लैव्यव्यवस्था 19:33–34;
लूका 4:18–21;
1 पतरस 2:11–12

द. मूल विषय और बाइबल पाठ के बीच सम्बन्ध:

ऐनाबैपटिस्ट मसीहियों के सामने वर्तमान में यह बुलाहट है कि वे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा की जा रही न्याय करने की सेवकाई में उसका अनुसरण करें। इस सेवकाई में पलायन कर आए लोगों को स्वीकार करना भी शामिल है। लैटिन अमरीका में, ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं दोनों प्रकार के लोगों से मिलकर बनी हैं, यहाँ ऐसे लोग भी हैं जो पलायन कर आएं हैं और ऐसे लोग भी जो पलायन कर आए हुए लोगों को स्वीकार करते हैं। न विस्थापित हो जाना सरल है, और न ही विस्थापित परदेशियों को स्वीकार करना। उखाड़े जाने (बेघर किए जाने) और परिवर्तन की इन घटनाओं के मध्य परमेश्वर विश्वासयोग्य बना हुआ है।

2. प्रार्थना निवेदन:

अ. लैटिन अमरीका और कैरेबियाई देशों के एमडबल्यूसी सदस्यों की ओर से प्रार्थना निवेदन

* प्रार्थना करें कि स्थानीय मण्डलियाँ अपने अपने समुदायों में ऐसे लोगों को सहारा देने ठोस कदम उठाने के लिए अपने आप को समर्पित कर सकें जो पलायन कर उनके बीच में आएं हैं।
* हाँडरस, एल सेल्वाडोर, निकारागुआ, मैक्सिको, कोलम्बिया, और वेनेनजुएला के लिए प्रार्थना करें, ये ऐसे देश हैं जहाँ से सबसे अधिक संख्या में लोग हिंसा के कारण या बेहतर आर्थिक विकल्पों की तलाश में देश छोड़ कर बाहर जाने का प्रयास कर रहे हैं।
* लैटिन अमरीका से पलायन कर आने वाले लोगों को स्वीकार करने वाले देशों के लिए प्रार्थना करें, जैसे ब्राजील, इक्वाडोर, पेरु, कोलम्बिया, मैक्सिको, अमरीका, और कनाडा।

ब. सुझाव: लैटिन अमरीकी संस्कृति के अनुसार प्रार्थना

* कुछ लैटिन अमरीका परम्पराओं में, कलीसियाई प्रार्थना के लिए, प्रत्येक व्यक्ति खड़ा हो कर एक ही समय में बोल बोल कर प्रार्थना करता है (हर व्यक्ति एक ही समय में व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना बोल बोल कर करता है)। अन्त में सभी एक गीत गा कर या प्रभु की प्रार्थना बोलकर समाप्त करते हैं।
* कभी कभी आराधना में अगुवाई करने वाला लोगों को छोटे छोटे समूहों में बाँट देता है और प्रत्येक समूह को भिन्न भिन्न प्रार्थना निवेदन वितरित करता है, और समूहों में इन विषयों पर प्रार्थना की जाती है। (विश्व सहभागिता रविवार की आराधना में ऐसा ही करने का प्रयास करें)

स. एमडब्ल्यूसी की ओर से प्रार्थना निवेदन

* धन्यवाद दें कि संसार भर के ऐनाबैपटिस्ट लोग भिन्न भिन्न भाषाओं और भिन्न भिन्न संस्कृतियों के बाद भी परमेश्वर के राज्य में विश्वास के द्वारा आपस में एक बने हुए हैं।
* प्रार्थना करें कि संसार भर की ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं उनके समुदाय में बाहर से आए नवआगंतुकों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आगे आए।
* एमडब्ल्यूसी परिवार में बढ़ते हुए नेटवर्कों के लिए धन्यवाद दें – मिशन, सेवा, स्वास्थ, शान्ति, और शिक्षा सम्बन्धी नेटवर्क।
* प्रार्थना करें कि एमडब्ल्यूसी के जो जो सदस्य सताव और कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं वे ढाढ़स और आशा न छोड़े ताकि दृढ़ बने रहें।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

3. विश्व सहभागिता रविवार के लिए गीत:

- ⁕ नेव सारी मण्डली (क्र. 184, *एमसीआईं मसीही गीत*)
- ⁕ सेवा में, सेवा में, (क्र. 389, *एमसीआईं मसीही गीत*)
- ⁕ यात्री हूँ मैं जग में प्रभु जी (क्र. 438, *एमसीआईं मसीही गीत*)
- ⁕ उत्तम और शान्तिदायक बात (क्र. 439, *एमसीआईं मसीही गीत*)
- ⁕ जब जीवन के दुख सागर में (क्र. 396, *एमसीआईं मसीही गीत*)
- ⁕ छोड़ न मुझे प्यारे यीशु (क्र. 280, *एमसीआईं मसीही गीत*)
- ⁕ भोर के समय बोते (क्र.388, *एमसीआईं मसीही गीत*)

4. प्रतीकात्मक आराधना के लिए गतिविधियाँ और सजावट

⁕ अपने चर्च भवन के सामने के हिस्से को ऐसी वस्तुओं से सजाएं जो कि ऐसे स्थानों या देशों की निशानी हों जहाँ से आपके स्थान/कलीसिया या देश/प्रदेश में लोग पलायन कर आते हों या कभी आएं हो। उन स्थानों को भी शामिल करें जहाँ आपकी कलीसिया के लोग पलायन कर गए हों।

⁕ लैटिन संस्कृतियों में लोग आराधना के दौरान स्तुति के गीतों को गाने, गवाहियाँ देने और प्रार्थना करने में काफी समय देते हैं। अधिक जानकारी के लिए अतिरिक्त मार्गदर्शन देखें।

इग्लेसियास इवेंजेलिकास मेनोनिटास डी ओरिएंटे

5. भेंट

⁕ अनेक कलीसियाओं में, नगद भेंटों के अतिरिक्त, सदस्यों को उत्साहित किया जाता है कि वे भोजन सामग्रियाँ भी लेकर आएं ताकि इसे जरुरतमंदों के साथ बाँटा जा सके।

⁕ वेनेनजुएला में, नगदी का चलन बहुत कम है, यहाँ लोग मोबाइल बैंक ट्राँसफर के द्वारा अपनी भेंट चढ़ाते हैं।

⁕ एमडब्ल्यूसी आपको उत्सहित करती है कि विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट कलीसिया समुदाय के लिए इस दिन एक विशेष भेंट उठाई जाए। इस भेंट के विषय में एक सुझाव यह है कि प्रत्येक सदस्य एक समय के भोजन के व्यय के बराबर की राशि भेंट के रूप में दे जिससे कि एमडब्ल्यूसी समुदाय के नेटवर्कों और संसाधनों को योगदान दिया जा सकें। धन्यवाद का यह दीन तरीका एमडब्ल्यूसी के द्वारा की जा रही परमेश्वर की सेवा के लिए एक बड़ा योगदान सिद्ध हो सकता है।

6. अतिरिक्त मार्गदर्शन

आराधना विधि में शामिल करने अन्य सहायक सामग्रियाँ

- ⁕ आराधना की पुकार और आशीष वचन के लिए विधि (पृ. 3)
- ⁕ कविताएं और प्रार्थनाएं (पृ. 4)
- ⁕ उपदेश के लिए बाइबल सम्मत पृष्ठभूमि (पृ. 7)
- ⁕ उपदेश के लिए सहायक लैटिन अमरीका की गवाहियाँ (पृ. 13)
- ⁕ लैटिन अमरीकी संस्कृति से सम्बन्धित सुझाव (पृ. 19)
- ⁕ सण्डे स्कूल के लिए या अध्ययन के समय के लिए कुछ सुझाव (पृ. 20)
- ⁕ अन्य (पृ. 21, सिर्फ अंग्रेजी में)।

ब. अतिरिक्त सहायक सामग्रियाँ ऑनलाइन:

www.mwc-cmm.org/wfs
तस्वीरें, विडियो

सम्पर्क:
Willi Hugo Perez, Central America and Mexico Regional Representative, willihugo@mwc-cmm.org
Mariano Ramirez, Caribbean Regional Representative, marianoramirez@mwc-cmm.org
Pablo Stucky, Andean Regional Representative, pablostucky@mwc-cmm.org
Peter/Gladys Siemens, Southern Cone Regional Representative, petergladyssiemens@mwc-cmm.org

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

आराधना की पुकार और आशीष वचन के लिए विधि

आराधना की पुकार

* इस सहभागिता में, जहाँ परमेश्वर के राज्य की सन्तानों और वारिसों के रूप में हमारी एक ही राष्ट्रीयता है, हम आप में से प्रत्येक का स्वागत करते हैं। हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने हम सब पर, चाहे वे किसी भी स्थान के क्यों न हों, अपने प्रेम और अपनी दया को बनाए रखा है। इस स्थान में आप सभों का स्वागत है, और हम आप सभों को अपने निज लोगों के रूप में स्वीकार करते हैं।

* यीशु हमारा आदर्श है, जिसे जब वह बालक ही था अपने मूलस्थान को छोड़ कर दूसरे देश जाना पड़ा, वयस्क होने पर वह त्यागा गया, और मार डाला गया। यीशु मसीह के अनुयायी होने के नाते, हमें यह जान लेने के लिए बुलाया गया है कि हम सब परदेशी हैं और एक अन्य राज्य के नागरिक हैं, इस संसार के नहीं। हममें से अनेक अपने अपने मूल स्थान को छोड़ कर यहाँ आए हैं, या कभी हमारे पूर्वज अपने अपने मूल स्थान को छोड़ कर यहाँ आए थे। एक कलीसिया के रूप में, हमें बुलाया गया है, कि हम भी ऐसे लोगों से प्रेम रखें, उनके प्रति सहानुभूति जताएं, और उनकी सहायता के लिए कदम उठाएं, कहीं ऐसा न हो कि, हम भी, अपनी उदासीनता के कारण दूसरों के साथ भेदभाव कर उन्हें त्याग न दें।

* हम परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के प्रति कृतज्ञ हो कर आराधना करने एकत्रित हुए हैं।

* हम यहाँ अपने इस समर्पण को दृढ़ करने के लिए एकत्रित हुए हैं कि हम द्वार हमेशा खुला रखने वाली एक ऐसी कलीसिया बनें रहेंगे जो अपने सभी परदेशी भाइयों और बहनों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है चाहे वे किसी भी स्थान से आएं हों। हम एक ऐसी कलीसिया बनेंगे जो हमारे समाज के रवैये और मानसिकता में परिवर्तन के लिए अपना योगदान देती है।

* हे प्रभु यीशु, आज तू हमें बुला कि हम उन परदेशियों और यात्रियों को स्वीकार करें जो हमारे देश में आए हुए हैं, ताकि अपने अपने मूल स्थानों में व्याप्त अत्याचार, निर्धनता, सताव, हिंसा और युद्ध से बच सकें। तेरे ही चेलों के समान हमारे मन भी भय, शंका, और संदेह से भरे हुए हैं। हम अपने हृदयों और मनों में अवरोधों का निर्माण कर लेते हैं। अपने अनुग्रह के द्वारा सहायता कर कि हम अपने हृदयों से भय को बाहर निकाल दें, ताकि हम आनन्द के साथ शरणार्थियों को स्वीकार कर सकें और उदारता के साथ उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

2017 में कोनो सूर में आयोजित मेनोनाइट चर्चेस इन साउथ अमेरिका की एक सभा में प्रार्थना का समय।
फोटो: हेंक स्टेनवर्स

आशीष वचन

* आइये अब हम इस आराधना भवन से निकल कर बाहर संसार में परमेश्वर के राज्य के नागरिकों के रूप में जाएं। मसीह की उस शान्ति का प्रचार करें जो सारे समझ से परे है। अपने गाँव के, अपने शहर के, अपने जिले के, अपने प्रदेश के, अपने देश के और संसार भर के परदेशियों की सुधि लें।

* प्रभु हमारी सहायता कर कि इस सेवा को पूरी करने के लिए हमारी प्रेरणा का स्त्रोत स्वयं यीशु मसीह हो, जिसने सबसे निर्धन और सबसे जरुरतमंद को स्वीकार करते हुए और उन्हें अपने साथ एक करते हुए उनके प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किया। जो कुछ हम करते हैं, इस प्रकार से कर सकें, मानों हम इसे यीशु मसीह के लिए कर रहे हों, क्योंकि हम मसीह में एक हैं।

* शान्ति से जाओ, और स्मरण रखो कि परमेश्वर सारी बातों में विश्वासयोग्य है

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

कविताएं और प्रार्थनाएं

उत्तरवादी प्रार्थना

बाइबल पाठ: लूका 4:18–21 पर आधारित

अगुवा: [18]प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है;

सब: हे प्रभु, हमें क्षमा कर, सबसे कमजोर वर्ग के लिए तेरे सुसमाचार के सन्देश के अनुरूप अनेक बार हम कार्य नहीं कर पाते हैं।

अगुवा: कि बन्दियों को छुटकारे का

सब: हे प्रभु, हमें क्षमा कर, अनेक बार हमने प्रेम की कमी और तेरे वचन के प्रति समर्पण की कमी के कारण जरुरतमंदों, कमजोर और वंचित वर्ग के लोगों, और बन्धुओं की ओर ध्यान नहीं दिया है।

अगुवा: और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं

सब: हे प्रभु, हमें क्षमा कर, अनेक बार हमारे कार्य तेरे प्रेम के द्वारा प्रेरित नहीं थे।

अगुवा: और कुचले हुओं को छुड़ाऊं,

सब: हे प्रभु, हमें क्षमा कर, अनेक बार बन्धुओं और समाज से बहिष्कृत लोगों की ओर से हम तेरे न्याय और तेरी सच्चाई के पक्ष में खड़े नहीं हो सके।

ऐनाबैपटिस्ट युवा 2017 में सेन्ट्रल अमेरिकन मेनोनाइट यूथ कॉंफ्रेंस के एक कार्यक्रम के दौरान एक कार्यशाला में भाग लेते हुए।
फोटो: ऑस्कर सुरेज।

इबागुए मेनोनाइट चर्च इन कोलम्बिया में विश्व सहभागिता रविवार 2018 मनाया गया। फोटो: जोस अन्टोनियो वाका बेल्ज़ो।

अगुवा: [19]और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करुं।

सब: हे प्रभु, हमारी सहायता करे, कि हम तेरे वचन के अनुसार चल सकें, और तेरे इस सुसमाचार को उन सब लोगों तक पहुँचा सकें जो परदेश में कष्ट भोग रहे हैं।

अगुवा: [20]तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी ओर बैठ गया; और आराधनालय के सब लोगों की आँखे उन पर लगी थीं।

सब: हे प्रभु, हम यह संकल्प लेते हैं कि हिंसा और सामाजिक अन्याय के कारण विस्थापन संकट का सामना कर रहे भाई बहनों की सहायता करने के द्वारा हम यह सुनिश्चित करेंगे कि तेरे वचन का प्रचार हमारे प्रतिदिन के जीवनों में एक वास्तविकता बनें।

अगुवा: [21]तब वह उनसे कहने लगा, ''आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।''

सब: हे प्रभु, हम यह संकल्प लेते हैं कि तेरे इस सुसमाचार को उन सब लोगों तक ले कर जाएंगे जो विस्थापन की पीड़ा और हानि झेल रहे हैं। हालेलुय्याह, सिर्फ तू ही सदा सर्वदा महिमा और आदर के योग्य है! आमीन।

(लुज अमान्डा वालेंसिया, लबागुए मेनोनाइट चर्च इन कोलम्बिया के पासवान)

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

कविता: एक नया दिन आएगा

प्रत्येक खण्ड को पढ़ने के लिए अलग अलग लोगों को चुने, सामने में एक मसीह की ज्योति (मोमबत्ती) प्रज्जवलित करें, प्रत्येक पढ़ने वाला पढ़ते समय सामने आकर इस ज्योति से अपनी मोमबत्ती जलाए।

एक दिन आएगा,
जब जीवन एक भारी बोझ प्रतीत नहीं होगा
परन्तु सब लोगों के लिए बहुतायत का एक अद्भुत अनुभव सिद्ध होगा।
चाहे उनका मूल, उनका रंग, उनका देश, और उनका धर्म कुछ भी हो;
एक दिन आएगा, जब स्वतंत्रता एक स्वप्न प्रतीत नहीं होगी
परन्तु सब लोगों के लिए एक सुखद वास्तविकता होगी;
जब समानता पर कोई संदेह नहीं किया जाएगा
चाहे लोगों की संस्कृति, सामाजिक स्तर, लिंग, और आर्थिक दशा कुछ भी हो,
न ही कमजोर के पक्ष में आवाज उठाने की कोई आवश्यकता होगी
वह दिन आएगा जब भाईचारा ही
नागरिकता, प्रतिष्ठा, और सम्मान की सबसे उत्तम अभिव्यक्ति होगी।

एक दिन आएगा
जब मानवाधिकार के पक्ष में लड़ने वालों या
मानवाधिकार कानूनों की आवश्यकता नहीं होगी,
क्योंकि यह हमारे रग रग में दौड़ेगा
एक दिन आएगा जब न्याय चारो तरफ फूले–फलेगा
और इसे हम हर दिशा में देख पाएंगे।
एक दिन आएगा जब शरणार्थियों को लेकर आती हुई नावें दिखाई नहीं देंगी,
समुद्रों में, मरूस्थलों में, और हमारे देशों की दूरस्थ सीमाओं में,
शरणार्थियों को ढाढ़स बंधाने वाला न ही फ्राँसिस्कों का बनाया क्रूस,
न ही कोई शरणार्थी शिविर,
इन्हें रोकने न कोई अवरोध होगा, न दीवार, और न ही अकाल मृत्यु से सामना,
एक दिन आएगा जब सारी सीमाएं लुप्त हो जाएंगी और
मनुष्य मुक्त हो कर संसार भर में भ्रमण कर सकेगा,
एक देश से दूसरे देश हम बेरोकटोक उसी तरह से जा सकेंगे
जिस तरह से हम अपने अपने घरों में एक कमरे से दूसरे कमरे को जाते हैं।

एक दिन आएगा
जब हम मिलजुल कर साथ रहेंगे,
मुक्त हो कर इधर उधर जा सकेंगे,
एक दूसरे से बातचीत कर सकेंगे
एक दूसरे का आदर करेंगे,
आदान–प्रदान करेंगे
समालोचना करेंगे,
एक दूसरे की सहायता करेंगे,
एक दूसरे को समृद्ध बनाएंगे,
गीत गाएंगे,
स्वप्न देखेंगे,
काम करेंगे
जहाँ चाहेंगे वहाँ रहेंगे
और अपनी विशिष्ठता को जीने के लिए स्वतंत्र होंगे।

एक दिन आएगा जब सभी दीवारों और पोस्टरों में
सभी पत्रिकाओं में, समाचार पत्रों में, रेडियों में और टेलीविजन में
समाज को हर तरह का एक नयापन दिखाई देगा
एक दिन आएगा जब हम आराधना करेंगे,
और प्रेम का आदर होगा,
क्योंकि इसका अर्थ है कि हम में से प्रत्येक के हृदयों में यह जड़ पकड़ चुका है

हे प्रभु, यह दिन शीघ्र आए!
हम इसकी कल्पना अभी से कर चुके हैं!

(फ्लोरेन्टिनो उल्लीबारी, फ्यूडिसियोनेस फ्यूडुल्टा द्वारा प्रकाशित)

डोमिनिकन रिपब्लिक में कॉंफ्रेंसिया इव्हेंजलिका मेनोनिटा के सदस्य एमडब्ल्यूसी को अभिवादन प्रेषित करते हुए। फोटो: मारियो रामिरेज।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

एक पलायन करने वाले की प्रार्थना

हे प्रभु,

मैं यहाँ हूँ और उत्तर की ओर अपने पथ पर बढ़ता जा रहा हूँ।

मैं अपने साथ सब कुछ और कुछ नहीं ले कर चल रहा हूँ।

मेरे पास मेरी जड़े हैं, जो उस देश से उखाड़ दी गईं जिसे तूने मुझे रहने को दिया था। मैं अपने गृहस्थान, अपने मित्रों, और अपने परिवार को छोड़ कर जा रहा हूँ।

मैं अपने लोगों को और अपनी संस्कृति को छोड़ कर जा रहा हूँ।

मेरे पास कुछ खास नहीं रह गया है: मेरे पास सिर्फ एक थैला है, परन्तु इसमें मैं विश्वास, स्वप्न, और आशा पूरा पूरा भर कर ले जा रहा हूँ।

मैं अपने हृदय में पीड़ा भर कर भी जा रहा हूँ। मैं आशा रखता हूँ कि एक दिन लौटूंगा, वापस अपने प्रिय जनों के पास। मैं नहीं जानता कि मैं अपने सपनों के देश में पहुँच पाऊँगा या नहीं।

प्रभु, मेरी सिर्फ यह प्रार्थना है कि तू उत्तर की ओर बढ़ते मेरे मार्ग में मुझे अकेला न छोड़ दे।

मैं विश्वास करता हूँ कि कम से कम तू तो मुझे समझ सकता है। तुझे भी पलायन करना पड़ा और तेरा भी एक परिवार था जहाँ से तुझे निर्वासित कर दिया गया था।

हे प्रभु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे ही समान पलायन करने वाले अन्य लोग भी कभी भी प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने का विश्वास और आशा न छोड़े।

(जार्ज रेयस के नाम से, यह प्रार्थना एक बुलेटिन बोर्ड (कासा तोचन, मैक्सिको सिटी में युवा पुरूषों का एक शरणार्थी केन्द्र) के ''स्पिरिचुवल कार्नर'' हिस्से में चस्पा की गई थी।)

फोटो: एन्ना वोग्ट।

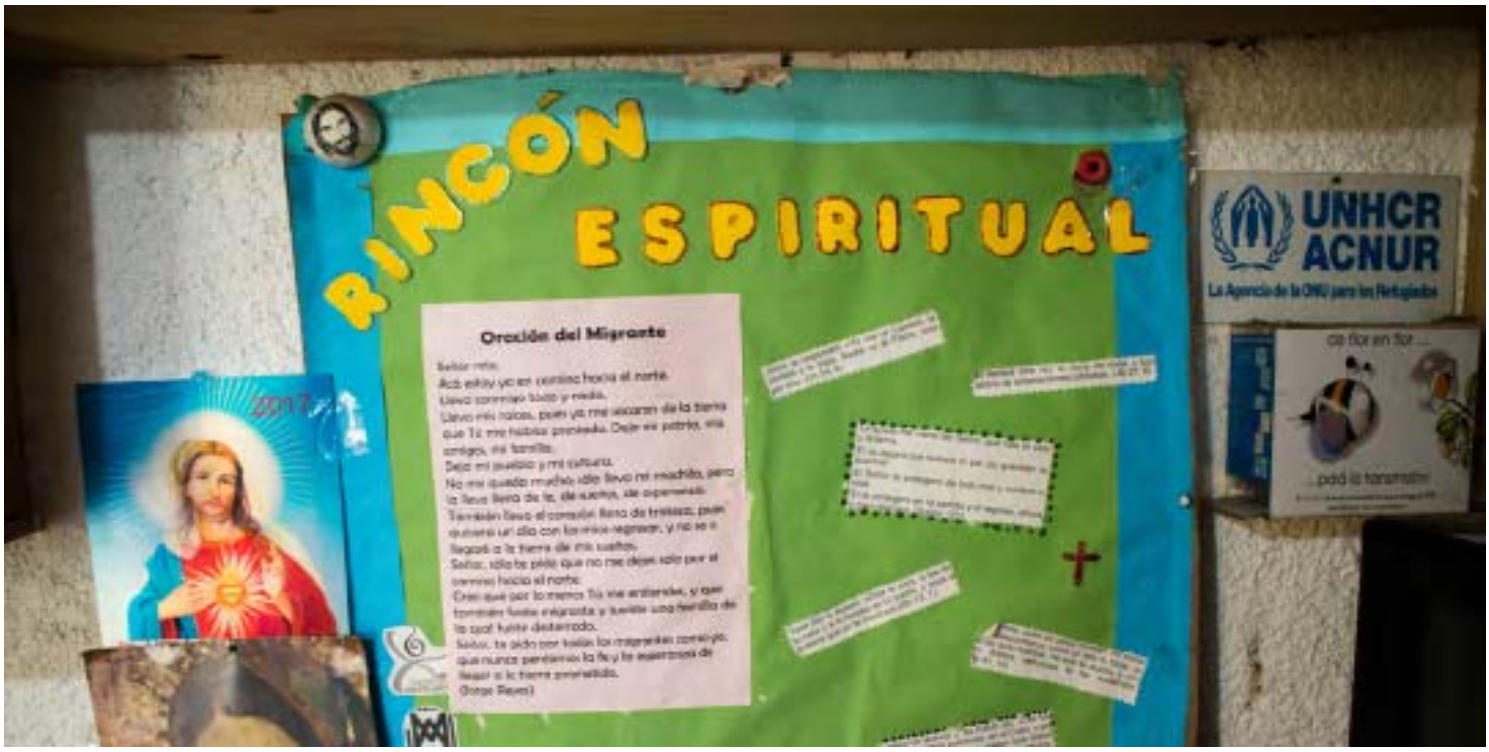

कासा तोचन के एक शरणार्थी केन्द्र में एक बुलेटिन बोर्ड में ''स्पिरिचुवल कार्नर'' हिस्से में। फोटो: एन्ना वोग्ट।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

उपदेश के लिए बाइबल पर आधारित पृष्ठभूमि

बाइबल पर आधारित सामान्य पृष्ठभूमि: परदेशी के विषय में बाइबल क्या कहती है?

परदेशी या बाहरी के लिए बाइबल में तीन अलग अलग इब्रानी शब्दों का प्रयोग किया गया है और प्रत्येक का अनुवाद भी अंग्रेजी में अलग अलग किया गया है (हिन्दी अनुवाद में यह बात पूरी तरह से लागू नहीं होती):

* . ''*गेर*'' का अनुवाद अक्सर अंग्रेजी में *सोजरनर* (हिन्दी में *परदेशी* अनुवाद किया गया है) के रूप में किया जाता है, यह शब्द एक ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग में लाया गया है जो किसी दूसरे देश का है परन्तु इस्राएलियों के बीच में रहता है। पुराना नियम में *गेर* का प्रयोग 92 बार किया गया है, और इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया है कि परदेशी के साथ भी स्थानीय नागरिकों के समान ही व्यवहार किया जाए। लैव्यव्यवस्था 19 में इसी शब्द का प्रयोग किया गया है, जहाँ परदेशियों, विधवाओं, और अनाथों की सुधि लेने के सम्बन्ध में इस्राएलियों को बहुत से निर्देश दिये गये हैं।

* ''*तोशाब*'' शब्द का अनुवाद अक्सर *फॉरेनर* (हिन्दी में *परदेशी* ही अनुवाद किया गया है) के रूप में किया गया है, और पुराना नियम में इसका प्रयोग सिर्फ 15 बार किया गया है। इन परदेशियों *(तोशाब/फॉरेनर)* की मजबूरियों का लाभ नहीं उठाना है, परन्तु परदेशियों *(गेर/सोजरनर)* के जैसे ही इन के साथ भी समानता का ही व्यवहार प्रगट करना है।

* ''*नाकर*'' का अनुवाद अधिकांशत: *स्ट्रेंजर* (हिन्दी में *अन्यजाति*) के रूप में किया गया है, और पुराना नियम में इसका प्रयोग 35 बार किया गया है, और इनके विषय में सामान्यत: यह निर्देश दिया गया है कि इस्राएलियों को दूसरे देशों के देवताओं और अन्यजाति लोगों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखना है। इसमें एज्रा 10 का हवाला भी शामिल है, जहाँ इस्राएलियों को यह निर्देश दिया गया है कि वे अन्यजाति देवताओं के साथ साथ अन्यजाति पत्नियों को भी अपने से दूर कर दें।

नया नियम में परदेशी या बाहरी के लिए दो अलग अलग यूनानी शब्दों का प्रयोग किया गया है, परन्तु इब्रानी शब्दों के अर्थों में जिस प्रकार का अन्तर सामने आता है, वैसा अन्तर यूनानी शब्दों के अर्थ में दिखाई नहीं देता।

* ''*पारोइकोस*'' शब्द का प्रयोग नया नियम में सिर्फ चार बार किया गया है, यह उन सभी व्यक्तियों के लिए प्रयोग में लाया गया है जिनके पास नागरिकता नहीं है। इस शब्द का प्रयोग 1 पतरस 2 में किया गया है।

* ''*जेनोस*'' का प्रयोग नया नियम में 14 बार किया गया है, और सामान्यत: यह परदेशियों (*स्ट्रेंजर्स और सोजरनर्स*) के लिए प्रयोग में लाया गया है, ऐसे लोग जो उस स्थान में तो रहते हैं परन्तु किसी और स्थान से आए हैं।

इग्लेसिया मेनोनिटका जोस मारिया कारो, चिली में विश्व सहभागिता रविवार 2018 मनाया गया और एक दूसरे के पैर धोए गए जैसा कि यीशु ने किया था। फोटो: इग्लेसिया मेनोनिटा जोस मारिया कारो।

पुराना नियम में, इस्राएलियों को बिल्कुल स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि उनके बीच में निवास करने वाले परदेशियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए। परन्तु, उस अवधि के कुछ बिन्दुओं में ऐसे समय भी आए जब इस्राएलियों को यह निर्देश दिया गया कि वे उन लोगों के साथ सख्ती से पेश आएं जिन्होंने प्रतिज्ञा के देश पर कब्जा जमा लिया है या जो उन्हें पराए देवताओं के पीछे जाने के लिए उकसाते हैं, ठीक जिस प्रकार से, पराए देवताओं के पीछे जाने वाले इस्राएलियों के लिए भी कठोर दण्ड और परिणाम निर्धारित किए गए थे।

यह नया नियम है, जहाँ हम यीशु मसीह में, परमेश्वर की दया के विस्तार को अधिक गहराई से समझ पाते हैं। हमें प्रेम का व्यवहार करने के लिए बुलाया गया है, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के साथ भी हमें प्रेम करना है (मत्ती 5:43–48), और प्रेम में हो कर जरुरतमंदों की सुधि लेना है (मत्ती 25:31–40) – जैसा कि स्वयं यीशु ने किया। लूका 4 में सेवकाई के लिए यीशु की बुलाहट के विषय में वर्णन करते हुए लूका ने इस बात को सामने लाया है कि यीशु अनेक प्रकार के शोषणों से मुक्ति पर जोर देता है। पतरस हमें यह स्मरण दिलाता है कि मसीहियों के रूप में हमें इस समय संसार में परदेशियों के समान रहना है, और संसार के सामने एक सशक्त गवाही प्रस्तुत करना है। हमारे लैटिन अमरीकी भाई बहनों की गवाही इस बात का एक उदाहरण है कि, जब कलीसिया पलायन कर आए लोगों के बीच प्रेम की सेवा करने के लिए जाती है तो ऐसा करने के द्वारा, दरअसल कलीसिया उन्हें ''सुसमाचार का प्रचार'' कर रही है (लूका 4:18), यीशु से मिलने का अवसर दे रही है, और उनके जीवनों के लिए नई आशा और दिशा प्रदान कर रही है।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

बाइबल स्थलों की पृष्ठभूमि:

लैव्यव्यवस्था 19 एक ऐसा अध्याय है जिसमें अनेक नियमों का एक संग्रहण है, अनेक नियमों के साथ विशेष रूप से यह भी बताया गया है कि दस आज्ञाओं के अनुसार जीवन किस प्रकार से व्यतीत करना है। पद 33 और पद 34 में यह मांग की गई है कि इस्राएलियों के बीच में निवास कर रहे परदेशी के साथ भी उतनी ही निष्पक्षता और समानता का व्यवहार करना है जिस प्रकार से स्वयं इस्राएलियों के साथ किया जाता है, इस आज्ञा को पुराना नियम में बार बार दोहराया गया है। निर्गमन 22:21; लैव्यव्यवस्था 23:22; व्यवस्थाविवरण 24:19–21; यिर्मयाह 22:3; जकर्याह 7:10; मलाकी 3:5 देखें। परदेशियों से प्रेम करने की इस आज्ञा का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि यह उनके लिए इस बात का एक स्मारक था कि वे भी एक समय यह अनुभव कर चुके थे कि परदेशी के समान जीवन बिताना क्या होता है। यह हमें भी, जो अपने अपने स्थानों में परदेशियों को स्वीकार करने के लिए बुलाए गए हैं, स्मरण दिलाने के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है।

लूका 4:18–21. अनेक धर्मज्ञानियों के अनुसार लूका का सुसमाचार एक ऐसा सुसमाचार है जो ''कंगालों के लिए प्राथमिकता देने वाला विकल्प'' सामने रखता है। लूका का सन्देश कमजोर वर्ग के लोगों को ध्यान में रख कर प्रस्तुत किया गया है, इस सन्देश में उन्हें एक पहचान दी गई है, उन्हें स्वतंत्र किया गया है, और संसार के प्रति परमेश्वर की सेवकाई में उन्हें शामिल किया गया है। (लूका के पहले तीन अध्यायों को पढ़ें। इन अध्यायों में चरवाहों, यूसुफ, एक गर्भवती स्त्री के रूप में मरियम, मन्दिर में दो बुढ़े लोगों का उल्लेख किया गया है। ये सब के सब एक ऐसे समाज के किसी ने किसी कमजोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है जहाँ ये भिन्नताएं

छाटो छिको मण्डली, पेरु के सदस्य मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस।
फोटो: हेंक स्टेनवर्स।

फेथ मेनोनाइट चर्च, स्पेनिश टाऊन, जमैका के बच्चे, सण्डेस्कूल आरम्भ में सुबह प्रार्थना करते हुए। फोटो: गलेन लेहमन

स्पष्ट रूप से सामने आती हैं।) इस सन्दर्भ में, लूका ने यह दिखाया है कि यशायाह (61:1, 2) की पुस्तक का पठन करते हुए यीशु अपनी सेवकाई का आरम्भ कर रहा है; वह यह घोषणा कर रहा है कि परमेश्वर का राज्य शैतान के अत्याचारों का अन्त कर देगा। इस पुस्तक के सन्दर्भ में (और शायद सम्पूर्ण नया नियम के सन्दर्भ में), यह काफी यथार्थ घोषणा है, साथ ही, इसमें आत्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक, और भौतिक अर्थ भी शामिल हैं। हमारे प्रभु की प्रसन्नता, या अनुग्रह का वर्ष जुबली को दर्शाता है: न्याय का वर्ष, जब यहाँ तक कि गुलामों और परदेशियों को भी परमेश्वर के लोगों के बराबर ला कर खड़ा कर दिया गया है। जुबली का वर्ष सामाजिक अत्याचारों से मुक्त करने वाला तो है ही, साथ ही आत्मा के उद्धार का सुसमाचार प्रचार करने वाला भी है (लैव्यव्यवस्था 25 देखें)। मसीह की सेवकाई में सारे पहलू शामिल हैं, यह न सिर्फ व्यक्ति के आत्मिक उद्धार के लिए चिन्तित रहता है, बल्कि उस आपसी और सामाजिक रिश्तों में भी उद्धार की हिमायत करता है, जो सब लोगों के लिए न्याय सुनिश्चित करने के द्वारा प्रगट किया जा सकता है। यह परमेश्वर का *शालोम* है। यह *यूटोपिया* ह्न(आदर्श राज्य/परमेश्वर का राज्य) को वास्तविकता प्रदान करता है। इसी अर्थ में यीशु ने कहा है, ''आज ही यह लेख तुम्हारे लिए पूरा हुआ है'' (लूका 4:21), क्योंकि यह जुबली सिर्फ मसीह की प्रभुता के आधीन ही सम्भव है।

1 पतरस 2:11–12. पतरस की पत्रियाँ लिखते समय हमेशा विस्थापित लोगों को ध्यान में रखा गया: आरम्भिक कलीसिया के तितर बितर हुए भाई और बहन, जिन्होंने अपने मूलस्थान को खो दिया था, जो निर्धन थे, जिनके पास विश्वास के

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

इग्लेसिया ऐनाबाउटिस्टा मेनोनिटा डे ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना में विश्व सहभागिता रविवार 2018 मनाया गया। फोटो: इग्लेसिया ऐनाबाउटिस्टा मेनोनिटा डे ब्यूनस आयर्स

समुदाय के अतिरिक्त ऐसा कोई भी नहीं था जिनसे वे आशा रख सकें। इस अर्थ में, 1 पतरस 2:9, 10 में, जो कुछ भी नहीं थी (जड़ से उखड़ चुके थे), उन्हें प्रेम के निम्नलिखित पदनाम देकर प्रतिष्ठित किया गया: चुना हुआ वंश, राजपदधारी याजकों का समाज, पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा। इन वाक्याशों में उस परमेश्वर के महान कार्यों का प्रचार किया गया है जिसने अपने लोगों को अधंकार से बाहर निकाला और अद्भुत ज्योति में ले आया। एक ओर, यह बाइबल पाठ परमेश्वर के विशिष्ठ परिवार के विषय में है, जो एक ही राजा के आधीन है, चाहे उनकी दशा, या जाति, या भोगौलिक स्थिति कुछ भी हो। साथ ही साथ, यह एक ऐसा स्थल भी है, जो विस्थापितों, सताए हुओं, और अपमानित किए हुओं की दशा का भी मान रखता है। ये लोग परमेश्वर की सन्तान है, उसके याजक हैं, एक अलग जाति, एक अलग राज्य के लोग हैं, एक ऐसे राज्य के लोग, जो भौगौलिक, राजनैतिक, सामाजिक, या सांस्कृतिक प्रतिष्ठा पर विजय प्राप्त करता है। तौभी, आदर की इन पदवियों के बाद भी, उन्हें यह भूलना नहीं चाहिए कि वे परदेशी, यात्री हैं ''जो इस संसार से हो कर जा रहे हैं'' (पद 11 और 12)। दूसरे शब्दों में, वे सुरक्षाविहीन हैं और उन्होंने मेलमिलाप के महान कार्य के लिए स्वयं को प्रभु पर छोड़ दिया है। उन्होंने मूरतों से अपने सम्बन्धों को तोड़ लिया है और परमेश्वर के राज्य से जुड़ गए हैं और यहोवा की बाट जोहते हैं जो भलाई से लबालब है।

पुराना नियम और नया नियम में एक विचार प्रमुख रूप से पाया जाता है, और वह यह है, कि परमेश्वर के लोगों को यह स्मरण रखना है कि जब वे असहाय थे उस समय परमेश्वर ने उनकी सुधि ली और उनका उद्धार किया। इसके परिणामस्वरूप परमेश्वर के लोगों को अपने चारों ओर के असहाय लोगों की सुधि लेना है, क्योंकि परमेश्वर के लोग यह अच्छी तरह से समझ सकते हैं कि अत्याचार झेलना और दुर्व्यवहार सहना क्या होता है। परमेश्वर के लोग इस संसार में परदेशी और बाहरी हैं, और इसी कारण से परमेश्वर के लोगों को बुलाहट दी गई है कि वे परदेशी को ग्रहण करने और उसकी पहुनाई करने के लिए अपने हृदयों को खोलें।

* परमेश्वर के लोगों के रूप में हमें यात्रियों, परदेशियों, और बाहरी लोगों के समान जीवन व्यतीत करना है, क्योंकि हमारी प्राथमिक नागरिकता परमेश्वर के राज्य में है किसी देश या जिले में नहीं।

* इसलिए कि हम यह जानते हैं कि यात्री और परदेशी होने तथा परमेश्वर के द्वारा सम्भाले जाने का अर्थ क्या है, हमें यह बुलाहट दी गई है कि हम ऐसे लोगों को सम्भाले जो हमारे बीच में परदेशियों और बाहरी लोगों के रूप में रहते हैं, और उनके साथ अच्छा व्यवहार करें।

* अनेक लैटिन अमरीकी ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं परदेशियों और पलायन कर आए हुए लोगों के द्वारा 25 या 50 या 75 वर्ष पूर्व आरम्भ की गई थीं। और अनेक लोग जो आरम्भ में ऐनाबैपटिस्ट मण्डलियों का हिस्सा बनें, वे उस समय हावी धार्मिक संस्कृति से अलग हो गए, और इस तरह से किसी ने किसी तरीके से उन्होंने भी अपने ही देश में स्वयं को एक परदेशी के रूप में अनुभव किया। वे सभी जान गए कि परदेशी के सामने आने वाली चुनौतियाँ क्या होती हैं, और यह भी जान गए कि परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की आशीष क्या होती है। अब उन्हें यह बुलाहट दी जाती है कि वे उनके स्थानों में पलायन कर आने वाले लोगों को स्वीकार करें।

यंग ऐनाबैपटिस्ट लोगों ने 2017 जेयूएएमसीए (सेन्ट्रल अमेरिकन मेनोनाइट यूथ कॉंफ्रेंस में) के दौरान एक कार्यशाला में भाग लिया।
फोटो: ऑस्कर सुरेज।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

* निर्गमन 23:9; व्यवस्थाविवरण 10:18–19; व्यवस्थाविवरण 24:21–22; इफिसियों 2:12, 19 (तीनों स्थलों को पढ़ें)

लूका 4:18 से 21 और 1 पतरस 2:9 और 10 हमारे बीच आए बाहरी या परदेशी व्यक्ति को स्वीकार करने और उसे प्रेम करने के अर्थ को गहराई से समझने में हमारी सहायता करते हैं। यीशु के अनुसार, इसका अर्थ है, ''कंगालों को सुसमाचार सुनाना, बन्दियों को छुटकारे का, और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार सुनाना और कुचले हुओं को छुड़ाना, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करना।'' 1 पतरस में इस मूलविषय पर यह कहते हुए जोर दिया गया है कि हमें परमेश्वर के महान कार्यों की गवाही देने के लिए बुलाया गया है, कि सब लोगों को अंधकार से बुला कर परमेश्वर की अद्‌भुत ज्योति में लाएं। परदेशियों और बाहरी व्यक्तियों को स्वीकार करने वाला हमारा प्रेम एक सक्रिय प्रेम है, जो दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनने के साथ आरम्भ होता है। संसार भर में फैली हमारी ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं और एजेंसियाँ इस सक्रिय प्रेम के बहुत से उदाहरणों को सामने रखती हैं, जैसे, वे सुसमाचार का प्रचार करती हैं, लोगों को शिक्षित बनाती हैं, स्वास्थ सेवाएं देती हैं, मानसिक अघात से उबरने में सहायता करती हैं, विकास कार्य करती हैं, शान्ति और मेलमिलाप के लिए कार्य करती हैं, अहिंसा और पहुनाई का व्यवहार करती हैं, और अपातकालीन राहत कार्यों में योगदान देती हैं। प्रेम के ये कार्य हमारे बीच के परदेशियों और अधिकारहीन लोगों के बीच में किए जाते हैं जो अपने मूल देश को छोड़ कर दूसरे देश में निवास कर रहे हैं। हम पर परमेश्वर के आत्मा के इन प्रगटीकरणों के लिए हमें धन्यवाद देना चाहिए (लूका 4:18) और परमेश्वर के आत्मा के कार्य के गवाह के रूप में अपनी बुलाहट को दृढ़ करना चाहिए (1 पतरस 2:9)।

मेनोनाइटेन ब्रुजर जेमियनडेन पैरागुए की मण्डली एमजीबी, फिलाडेलफिया में आराधना सभा। फोटो: डेलबर्ट वर्केटिन।

वेननजुएला में विश्व सहभागिता दिवस 2018 मनाया गया। फोटो: इग्लेसिया इव्हालिकास मेनोनिटास डे ओरियंटे

वर्तमान सन्दर्भ:

अपने स्वयं के घर को छोड़ कर एक देश में आने का अनुभव बहुत ही कठिनाइयों से भरा हुआ होता है।

* ''आप अपने घर को तभी छोड़ते हैं जब आप का घर शार्क का मुँह बन जाता है . . .। आप अपने घर को तभी छोड़ते हैं जब आपका घर आपको वहाँ रहने नहीं देता'' – वार्सन शाएर की कविता *होम* से लिया गया।

* घर शार्क का मुँह तब बन जाता है जब अपराध और गृहयुद्ध एक व्यक्ति का उसके घर में ठहरे रहना खतरनाक बना देते हैं; जब राष्ट्रीय और विदेशी सरकारों, सहकारी संस्थानों, और बहुराष्ट्रीय बैंकिग संस्थाओं की आर्थिक नीतियाँ और कार्यप्रणाली जीवन को कठिन बना देते हैं; जब धार्मिक, सामाजिक या राजनैतिक असहिष्णुता विवेक के अनुसार जीवन जीना बहुत कठिन बना देते हैं; और जब जातिगत और सामाजिक वर्गीकरण लोगों को एक दूसरे से अलग करने लगते हैं।

* अनेक लोग जब अपने घर को छोड़ कर किसी नए देश या अपने ही देश के किसी अन्य हिस्से में में पहुँचते हैं तो वे एक नए स्थान में कष्ट की अवस्था (भूख और अभागापन) में पहुँचते हैं, जो कि सबसे निम्न और सबसे निर्धन सामाजिक अवस्था होती है। इन परिस्थितियों के मध्य एक परदेशी के समान जीवन व्यतीत करना हताशाजनक होता है क्योंकि एक नए स्थान में अस्वीकृत, पारिवारिक और व्यावसायिक रिश्तों से रहित व्यक्ति कठिन परिस्थितियों के कारण स्वयं को त्यागा हुआ, दुर्व्यव्यहार झेलता, अकेला, और कभी कभी तो

विश्व सहभागिता रविवार

भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक (यौन) हिंसा का सामना करते हुए पाता है।

* भाषा एक कठिनाई हो सकती है, परन्तु भाषा चाहे समान ही क्यों न हो, स्थानीय लोग हमेशा ही भाषा शैली या भाषा संस्कृति के द्वारा यह जान लेते हैं कि व्यक्ति उनके बीच का नहीं है, और इसके परिणामस्वरूप उसे भेदभाव और तिरिस्कार का सामना करना पड़ता है।

* इन परिस्थितियों में, पीड़ा और कमजोर दशा के कारण आधीरता भी परदेशी के भार का एक हिस्सा बन जाती है। इन सारी बातों के कारण परदेशी अपने आप को त्यागा हुआ, असुरक्षित और अस्वीकृत महसूस करता है।

* संसाधनों की कमी के कारण भोजन भी उसके लिए संघर्ष का एक कारण बन जाता है। दूसरों की दया के भरोसे रहने के कारण वह स्वयं को असहाय महसूस करता है। यहाँ पर ''जब मैं भूखा था'' (मत्ती 25:35) वाला स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। जो यीशु मसीह को जानते हैं उनके लिए यह आवश्यक है कि एक परदेशी के हित में अपने विश्वास को अपने कार्यों व व्यवहार में दिखाएं। एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे पर जा जा कर रोटी, पानी, कपड़ों के लिए भीख मांगना; एक ऐसे स्थान के लिए गिड़गिड़ाना जहाँ उनके शरीर और प्राण को आराम मिल सकें – यह सब कुछ उन्हें हताश कर देता है।

* अपने मूल स्थान में सामाजिक–राजनैतिक हिंसा के कारण घर छोड़कर दूसरे स्थान पर आने पर लोग ऐसे लोगों का शिकार भी बन जाते हैं जो परदेशियों को पैसे दे कर इस शर्त पर गुलाम बना लेते हैं कि वे जीवित रहने में उनकी सहायता करेंगे। अनेक स्त्रियाँ जो दुर्दशा की चरम पर पहुँच जाती हैं उनके सामने अपने परिवार की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए एकमात्र रास्ता यह दिखाई देता है कि वे वेश्यावृत्ति की ओर मुड़ जाएं।

जमैका मेनोनाइट चर्च एनुएल कॉंफ्रेंस में एकत्रित हो कर मण्डलियाँ उत्साह के साथ आराधना करते हुए। फोटो: गेलन लेहमन

* पलायन करने वाले अनेक लोग – जो भूख से जूझते हैं, हिंसा के बीच स्वयं को शक्तिहीन पाते हैं, और अपने परिवार की परिस्थिति को सुधार पाने में सक्षम महसूस नहीं करते – हताश हो जाते हैं।

अपने मूल स्थानों को छोड़ कर आने वालों और उन्हें स्वीकार करने वालों के लचीलेपन, साहस, उदारता, और विश्वास में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के बहुत से प्रमाण दिखाई देते हैं।

* साथ ही साथ, अपने मूल स्थानों को छोड़ कर आए हुए लोग अद्भुत लचीलेपन का प्रदर्शन करते हुए भजन 23:4 के वचनों की सच्चाई की गवाही देते हैं, जिसकी प्रतिध्वनि यशायाह 40:31 में भी सुनाई देती है। एक नए स्थान पर पहुँच कर स्थानीय लोगों का सहारा प्राप्त करना परमेश्वर की ओर से अनुग्रह और दया की एक भेंट सिद्ध होती है।

* प्रेरणा और आशा मसीह की देह से मिलते हैं। घर पर ही ठहर गए लोगों और पलायन कर आए हुओं लोगों को स्वीकार करने वालों की प्रार्थनाओं के द्वारा सम्भाला जाना एक आशीष है, परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के आश्वासन की एक आशीष।

* पलायन कर आए हुए लोगों को आशा मिलती है जो उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति के आश्वासन में और प्रार्थनाओं, प्रेम और नए स्थान में मिलने वाली व्याव्हारिक सहायता के माध्यम से सम्भालती है। पलायन कर आए हुए लोगों को ऐनाबैपटिस्ट भाई बहनों को स्वीकार करना एक बड़ी आशीष है, वे स्थानीय मण्डलियों और ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट मिशन और सेवा एजेंसियों की ओर से प्राप्त आर्थिक सहायता के द्वारा कलीसियाई परियोजनाओं का संचालन करते हैं।

* पलायन कर आए हुए लोगों के द्वारा भी आशीष मिलती है जब वे नए स्थान में आ कर अपने वरदानों को लोगों और कलीसियाओं के साथ अपने नए घरों में बाँटते हैं। हमारी कलीसियाओं ने इब्रानियों 13:2 में बताई गई सच्चाई को दृढ़ किया है, कि परदेशियों की पहुनाई करने के द्वारा उन्होंने वास्तव में अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

मनन के लिए प्रश्न:

* लूका 4 में यीशु ने सारांश में बताया है कि वह क्या सेवकाई करेगा, क्या हमारी सेवकाई भी यीशु की सेवकाई के समान है? यीशु के तरीके से सेवा करने का अर्थ क्या है? अपने तरीके से सेवा करने का अर्थ क्या है?

* हमारी स्थानीय मण्डलियाँ और हमारी कलीसियाएं किस प्रकार से यीशु के पीछे एक कलीसिया के रूप में चलने के अपने समर्पण को प्रगट करती हैं? पलायन कर आए हमारे पड़ोसियों की पीड़ाओं को देख कर तरस खाने और कदम उठाने के लिए कौन सी बात हमें प्रेरित करती है?

* इब्रानियों 13:2 हमें यह स्मरण दिलाता है कि परदेशियों को स्वीकार करने के द्वारा हम स्वर्गदूतों को स्वीकार करते हैं। आप की कलीसिया ने इसका अनुभव किस प्रकार से किया है?

* हम अक्सर पलायन कर आए हुए लोगों और शरणार्थियों पर ध्यान तब केन्द्रित करते हैं जब वे हमारे देश में या हमारे दरवाजे पर पहुँच जाते हैं। हम उन आर्थिक ढाँचों, राजनैतिक विचारधाराओं और कदमों के विषय में सिखाने और सीखने के लिए क्या कर सकते हैं जिनके कारण ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं कि लोग अपने मूल स्थान को छोड़ने के लिए बाध्य हो जाते हैं, और जिनके कारण नए स्थान के लोग इन्हें अस्वीकार करने को बाध्य हो जाते हैं? हम किन तरीकों से आवश्यक परिवर्तन के लिए अपना योगदान दे सकते हैं?

* हमारे लैटिन अमरीकी भाई बहनों ने यह पाया कि हमारे स्वयं के समाजों में कुछ ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें अलग कर दिया गया है, जो अपने ही मूल स्थानों में ''एक परदेशी'' के समान अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम उनके साथ कैसा पेश आ रहे हैं, उन्हें किस प्रकार से स्वीकार कर रहे हैं और किस प्रकार से उन तक परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं?

* हम, जो परमेश्वर की प्रजा हैं, किस प्रकार से पलायन कर आए हुए लोगों के समान है? यह किस प्रकार से परमेश्वर के प्रति हमारे विचार और हमारे विश्वास पर असर डालता है? यह किस प्रकार से हमारे विचारों को उन्नत बना सकता है कि हमें किस प्रकार से अपने बीच रहे रहे परदेशी के साथ व्यवहार करना है?

* यह बहुत सम्भव है कि एक परदेशी की सुधि लेना – चाहे वह बाहर से पलायन कर आया हुआ कोई व्यक्ति हो या हमारे बीच का ही जरूरतमंद और असहाय व्यक्ति – हमें हमारे ''सुख सुविधाओं के दायरे'' से बाहर कर देगा और शायद हमें दूसरे लोगों की आलोचना का सामना भी करना पड़े। इस बात में आप एक कलीसिया के रूप में एक दूसरे की सहायता किस प्रकार से करते हैं?

मेनोनाइट चर्चेस इन साउथ अमेरीका की 2017 की सभा में गीत गाते और आराधना करते हुए।
फोटो: हेंक स्टेवर्स

* क्या यह सम्भव है कि हमारे विश्वास के परिवार के भीतर ही भेदभाव हो?

* पलायन करने वालों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कार्य करने वाली संस्थाएं, चाहे मसीही संस्था हो या नहीं, किस प्रकार से आपकी कलीसिया को इस विषय पर जागरूक कर सकती हैं? आप किस प्रकार से ऐसी संस्थाओं का सहयोग कर सकते हैं?

उपदेश के अन्त में विस्थापितों और पलायन करने वाले लोगों के लिए प्रार्थना की जा सकती है। साथ ही, परमेश्वर का धन्यवाद दें कि वह उनके प्रति और हमारे प्रति विश्वासयोग्य बना रहता है, और हमारी कलीसियाओं और संस्थाओं के माध्यम से अपने स्नेह को अनेक तरीकों से प्रगट करता है। समापन में लोगों को आव्हान दें कि परमेश्वर के लोगों के रूप में हमें प्रभु की प्रसन्नता के वर्ष का प्रचार करना है।

– रोड्रिगो पेड्रोगा (लैटिन अमरीका, मैक्सिको के लिए भूतपूर्व याब्स कमेटी सदस्य); पाब्लो स्टकी (एमडब्ल्यूसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि, लैटिन अमरीका – एन्डियन रिजन, कोलम्बिया) द्वारा संकलित; अर्लि क्लासन (एमडब्ल्यूसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि समंवयक, कनाडा) की ओर से विशेष सहयोग।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

उपदेश तैयार करने के लिए सहायक कुछ लैटिन अमरीकी गवाहियाँ

परदेशी को परिवार का सदस्य बनाना

कभी कभी लोग अपने ही देश में अलग कर अधिकारहीन या वंचित बना दिए जाते हैं, और अपने ही देश में ''बाहरी और परदेशी'' हो जाते हैं। समाज के अपने कुछ ''बाहरी'' होते हैं जिन्हें यह अलग कर देता है और परदेशी मान लेता है क्योंकि ये उसके नियमों का पालन नहीं करते। सुसमाचार ऐसे लोगों तक पहुँच कर उन्हें साथ आने के लिए न्यौता देता है। सुसमाचार कलीसियाओं को प्रेरित करता है कि वह ऐसे लोगों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करें, उनकी सुधि लें, और उनकी ओर ध्यान दें। उन्हें वंचित कर देने पर वे बाहर हो जाते हैं। कलीसिया उन्हें सम्मान देती है जिससे कि प्रिय लोगों के रूप में उनकी पहचान पर मुहर लग जाती है। कलीसिया उन्हें न्यौता देती है कि वे परमेश्वर के राज्य के समुदाय में प्रवेश करें। कलीसिया उन्हें उस बाहरी स्थान से ला कर घर में स्वीकार करती है।

– कम्युनिडाड क्रिस्टियाना एल परेइसो, काराकोस, वेननजुएला

''हमने सीखा है . . .''

वेननजुएला की समस्याएं अर्थव्यवस्था, रिश्तों, स्वास्थ सेवाओं, सार्वजनिक सेवाओं पर असर डाल रही है, और अपराध, असुरक्षा, भ्रष्टाचार, गन्दी राजनीति, कुपोषण और महंगाई को बढ़ावा दे रहीं हैं। हमने कोलम्बिया आने का निर्णय लिया, कि अपने परिवारों के जीवनस्तर को सुधार सकें, नए अवसरों की तलाश कर सकें, और अपने जीवनों में बदलाव ला सकें। यहाँ पहुँचने पर, हमें एक भारी भावनात्मक अघात लगा जब हमने वेननजुएला से आए अन्य लोगों को भीख मांगते हुए देखा। वेननजुएला की अर्थव्यवस्था की तुलना कोलम्बिया की अर्थव्यवस्था के साथ करना कठिन है: हमें बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ा जब हमने देखा कि यहाँ के बाजारों, दुकानों, चौकों, और गोदामों में भारी मात्रा में वह सारी भोजन सामग्रियाँ रखी हुई हैं, जो सीमा पार हमारे देश में उपलब्ध नहीं है।

मेनोनाइट चर्च इन काराकास के वालेंटियर्स,
एक अस्पताल में भोजन का वितरण करते हुए।
फोटो: रेड डे मिशन्स मेनोनिटा डे वेननजुएला

परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम उन सब लोगों के कृतज्ञ हैं जिन्होंने हमें अपने देश में स्वीकार किया। हमें सरकार की ओर से कोई सहायता प्राप्त नहीं हुई। हमने कलीसिया के पास आने का निर्णय अपने आप नहीं लिया था। परन्तु हम यह मानते हैं कि परमेश्वर हमें यहाँ ले कर आया, क्योंकि हम यह नहीं जानते हैं कि मेनोनाइट चर्च जैसी कोई कलीसिया यहाँ है। अब कार्लोस का बपतिस्मा हो चुका है और वह कलीसिया का एक सदस्य है। इस कलीसिया में हमने परमेश्वर को जाना है। प्रतिदिन, हम पासवान और बच्चों के बीच सेवा करने वालों की ओर से वचन की एक शिक्षा प्राप्त करते हैं। हमें रियोहाचा मेनोनाइट कलीसिया की ओर से निशर्त सहयोग, ढेर सारा प्रेम, और प्रतिदिन की उनकी सहभागिता प्राप्त हुई है।

इस कलीसिया में, हमने मनन, सण्डे स्कूल और प्रार्थना योद्धाओं के माध्यम से परमेश्वर के वचन को सुनना सीखा है, और हमने एक समुदाय में रहना, और एक दूसरे की सहायता करना भी सीखा है। हमने जीवन में आए परिवर्तन को स्वीकार करना सीखा है। हमने लोगों, अपने परिवार, अपने मित्रों, प्रतिदिन हमारी सहायता करने वालों का मूल्य पहचाना सीखा है। हम सबसे पहले उन सारी वस्तुओं के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं जिन्हें हमने यहाँ प्राप्त किया, हम पासवान को वचन की शिक्षा देने के लिए धन्यवाद देते हैं, हम सण्डे स्कूल शिक्षक को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हमें अनुमति दी कि हम बच्चों के बीच किए जा रहे कार्य में सहायता कर सकें। हमने बुजुर्ग लोगों की सुधि लेने की सेवा के बारे में बहुत कुछ सीखा, यह रियोहाचा मेनोनाइट चर्च की एक सेवा है। हमने भाईचारा और एकता के बारे में सीखा। हमने परमेश्वर से प्रेम करना सीखा। इस कारण से, हम मेनोनाइट चर्च का धन्यवाद करते हैं कि वे उन्होंने हमें स्वीकार किया और आत्मिक रूप से निरन्तर बढ़ते जाने का अवसर प्रदान किया।

– वेननजुएला से पलायन कर आए लोग जिन्हें इग्लेसिया मेनोनिटा डे रियोहाचा, कोलम्बिया में स्वीकार किया।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

मेनोनाइट चर्च इन इस्ला मार्गरिटा, वेननजुएला द्वारा निर्धन लोगों को अरेपास (कार्न पैकेट) का वितरण किया गया।
फोटो: रेड डे मिसियोनेस मेनोनिटा डे वेननजुएला।

उन्नति करने के लिए एक स्थान

अन्ड्रेस जब *मेनोनिटा त्यूसाक्यूल्लो इन बगोटा* कलीसिया में आया तब उसके हृदय में क्रोध और भय था, और उसे इस बात की आशंका थी कि जिन लोगों ने उसके पिता और भाई की हत्या की है वे किसी भी समय बगोटा की सड़कों पर दिखाई दे सकते हैं। जब उसे यह अहसास हुआ कि उसे स्वीकार किया गया है और उसे महत्व दिया गया है, तो वह कलीसिया समुदाय के सामने अपने आप को खोलने लगा। जब उसे नई समझ गहराई से प्राप्त करने का अवसर मिला, तो उसने अपने हृदय से घृणा को बाहर कर दिया और उसे लगा कि अपने जीवन को फिर से स्थापित करना ही सम्मानजनक है। अन्ड्रेस की गवाही लोगों को स्वीकार करने वाली एक ऐसी कलीसिया के महत्व को बताती है जो लोगों की बातों को सुनने के लिए और समुदाय में और विश्वास में उन्नति करने के लिए एक स्थान उपलब्ध कराने को तैयार रहती है।

– इग्लेसिया मेनोनिटा तेयूसाक्विलो, बगोटा, कोलम्बिया

लोगों से प्रेम रखने के द्वारा परमेश्वर से प्रेम रखें

रूस/उक्रेन में रहने वाले मेनोनाइट लोग भारी संख्या में 1920 के दशक में और फिर 1940 के दशक में यहाँ से भाग गए। दो विश्वयुद्धों के कारण उत्पन्न कठिन परिस्थितियों और कम्युनिस्ट सरकार ने अनेक मेनोनाइट लोगों को विवश कर दिया कि वे वहाँ से भाग कर अन्य स्थान में किसी बेहतर विकल्प की तलाश करें। अनेक परिवारों को बलपूर्वक उनके घरों से बेदखल कर दिया गया। भाइयों और पिताओं को मार डाला गया या अलग कर दिया गया। यह एक ऐसे व्यक्ति की गवाही है जिसने विस्थापन और पलायन का अनुभव किया है:

अगस्त 30, 1924 को मेरा जन्म रूस में हुआ। जब मुझे रूस छोड़ना पड़ा उस समय मेरी आयु मात्र चार वर्ष की थी. . .। मैं 1927 में अपने माता पिता के साथ पैरागुए आ आया। यह आरम्भ में अत्यंत कठिन समय था. . .। मेरे पिता पैरागुए में शिक्षक थे और मैंने स्कूल जाना आरम्भ किया। 1952 में मेरे पति फ्रिट्ज किलेवर, जो शिक्षक थे, मेरे बच्चे, और मैं पैरागुए छोड़ कर ब्राजील के न्यूवा विटर्मासम में आ गए। मेरे पति हमारे मेनोनाइट समुदाय में शिक्षा प्रभारी थे। साढ़े तीन वर्ष बाद, पैरागुए में सम्पन्न एक मेनोनाइट कॉंफ्रेंस से लौटने के बाद, उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनकी मृत्यु हो गई। उनका स्वप्न था कि वे किसी पत्रिका के सम्पादक बनें, और उनका यह स्वप्न तब पूरा हो गया था जब उन्होंने *बिबेल उंड पफ्लग* नामक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया. . .। उनकी मृत्यु के पश्चात डेविड निक्केल नामक एक कृषक से 1967 में मेरा फिर से विवाह हुआ। साढ़े आठ वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद मेरे इस पति की भी मृत्यु हृदयाघात से हो गई। वे एक बहुत ही धर्मी व्यक्ति थे . . . मृत्यु से पहले उन्होंने बहुत ही शान्तभाव से मुझ से कहा: ''परमेश्वर से प्रेम रखो। हम परमेश्वर से कब ह्न(कैसे) प्रेम रख सकते हैं? हम मनुष्यों से प्रेम रखने के द्वारा ही परमेश्वर से प्रेम रख सकते हैं। हम परमेश्वर को देख या छू नहीं सकते और न भौतिक रूप से उसका अनुभव कर सकते हैं, हम अपने पड़ोसी से प्रेम रखने के द्वारा ही परमेश्वर से प्रेम रख सकते हैं। आज की रात मैं उन सारे व्यक्तियों के बारे में सोच रहा हूँ जिन्हें मैं जानता हूँ, और मैं ऐसा विश्वास करता हूँ कि मैंने उनसे प्रेम किया है। इस प्रकार से मैं परमेश्वर से प्रेम रख सका।''

– मेनोनाइट लोगों के पलायन के अनुभव पर मेलिटा लेगेह्न निक्केल की गवाही। मिशन एण्ड माइग्रेशन: ग्लोबल मेनोनाइट हिस्ट्री सीरिज/लैटिन अमरीका, गुड बुक्स, 2010, पृष्ठ 62 जैमे प्रिटो वाल्लाडेर्स के लेख से।

कॉंफ्रेंसिया मेनोनिटा डे मैक्सिको की एक मण्डली आराधना करते हुए। फोटो: डेविड विब।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

क्विटो मेनोनाइट चर्च प्रोजेक्ट के तहत शरणार्थियों और इक्वाडोर के बच्चों को ध्यान में रखते हुए शान्ति की शिक्षा और मूल्यों के विषयों पर कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।
फोटो: डेनियाला सांचेज।

भय से आनन्द की ओर

इक्वाडोर की इग्लेसिया क्रिस्टियाना मेनोनिटा डे क्विटो कलीसिया एक परियोजना का संचालन कर रही है जिसके अर्न्तगत कलीसिया के लोग शरणार्थियों को ग्रहण कर उन्हें सम्भालते हैं। इनमें से अनेक शरणार्थी कोलम्बिया के हैं, जो अपनी जान जोखिम में होने के कारण वहाँ से भाग आए, परन्तु साथ ही अन्य देशों से आए लोग भी इन शरणार्थियों में शामिल हैं। मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी इस परियोजना के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करती है, जबकि मेनोनाइट मिशन नेटवर्क, द सेन्ट्रल प्लेंस मेनोनाइट कॉंफ्रेंस (यूएसए) और इग्लेसिया क्रिसटियाना मेनोनाइट डे कोलम्बिया (आईएमसीओएल – कोलम्बियन मेनोनाइट चर्च) इंग्लेसिया क्रिस्टियाना मेनोनिटा डे क्विटो के साथ कार्य करते हुए लगातार सहयोग प्रदान करते हैं।

यहाँ से दो गवाहियाँ हैं:

जीवन और इसके प्रवाह के आगे समर्पण

क्लारा अपने परिवार के साथ तुमाको से इक्वाडोर आ गईं, तुमाको कोलम्बिया का एक ऐसा क्षेत्र है जो हिंसा के कारण पहचाना जाता है। तुमाको आकर उन्हें एक स्कूल में शिक्षिका के रूप में नौकरी मिल गई और कुछ समय के लिए उन्हें उनके जीवन में वह शान्ति और आर्थिक स्थिरता प्राप्त हो गई जो वे चाहती थीं। परन्तु शीघ्र ही वे और उनका परिवार एक सशस्त्र गुट के निशाने पर आ गया जो उन्हें डराने धमकाने लगा क्योंकि इस परिवार की ओर से उन्हें उनका ''हिस्सा'' नहीं मिला था। यह गुट उनके बच्चों को अगुवा करना चाहता था ताकि उन्हें गौरिल्ला आंदोलन (छापामार लड़ाई) में शामिल करे। क्लारा को जान से मारने की धमकी दी गई। अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस ने क्लारा और उसके परिवार की सहायता की कि वे कोलम्बिया से भाग सकें, और तुलकान आ सकें, जहाँ से वे क्विटो चले जाएं।

चूंकि अब क्लारा की सुरक्षा और कल्याण के सारे स्थान ध्वस्त हो चुके थे, अब वह सड़क पर आ चुकी थी और जीवित रहने के लिए सहायता मांग रही थी। उसकी ढेर शैक्षणिक योग्यताओं में से एक भी इस समय उसके काम नहीं आ रहा थी। वह अपने बच्चों और साथी के साथ अपने घर में ताला लगा कर भीतर रहा करती थी क्योंकि उसे लगता था कि अब भी उसे सताया जा रहा है, और इक्वाडोर भी उसके लिए एक सुरक्षित स्थान नहीं रहा। उसका बेटा, एक मेधावी छात्र था, परन्तु वह स्कूल जा कर अध्ययन नहीं करना चाहता था क्योंकि उसे डर था कि कोलम्बिया का गिरोह उसे ढूंढ़ कर मार डालेगा।

क्लारा आखिर इतना डर कर क्यों जी रही थी? वह इन सारी पीड़ाओं के मध्य किस प्रकार से अपने जीवन के प्रवाह को आगे बढ़ा सकती थी?

इसी कार्य को कलीसिया क्लारा और उसके परिवार के लिए कर रही है। क्लारा की सहायता की जा रही है कि वह अपने आप को भावात्मक बन्धनों से छुड़ा सके और नई वास्तविकता को स्वीकार कर सके, कुढ़न और हार मानने जैसी बातों से आगे बढ़ कर, जीवन और इसके प्रवाह के आगे समर्पण कर उसके अनुसार स्वयं को ढाल सके। क्लारा और उसका परिवार विश्वासयोग्यता के साथ कलीसिया की हर गतिविधि में भाग लेता है, क्योंकि उन्होंने यह महसूस किया है कि उन्हें यहाँ प्रेम मिला है और उन्हें ग्रहण किया गया है। कलीसिया की परियोजना के तहत उन्हें वे सारी आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई गईं हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता थी।

पिन्तेकुस्त का दिन

जोस एक शरणार्थी, कवि, और राजनेता है, जो प्यूरेटो तजेदा से सपरिवार हमारे दरवाजे पर पहुँचें। उन्हें कोलम्बिया से भागना पड़ा क्योंकि जोस एक समाजसेवी था जो अफ्रो–कोलम्बियाई लोगों के अधिकार के लिए लड़ रहा था। उसने अनेक कम्पनियों के द्वारा फैलाए जा रहे पर्यावरण और जल स्त्रोतों को प्रदूषित किए जाने के विरुद्ध भी आवाज उठाई थी। अर्धसैनिक बल और इन कम्पनियों के लोग इन्हें सताने लगे। जोस के परिवार को अनेक बार जान से मार डाले जाने की धमकियाँ दी गईं, उन्होंने यह महसूस किया कि उनका जीवन खतरे में है, और उन्होंने अपनी जान बजाने के लिए इक्वाडोर जाने का निर्णय लिया।

यद्यपि जोस और उसका परिवार जब कोलम्बिया में थे तब पेन्टिकॉस्टल चर्च के सदस्य थे, परन्तु यहाँ वे मेनोनाइट कलीसिया के साथ संगति करने लगे। जोस अपने साथ पेन्टीकॉस्टल तौर तरीके ले कर आया था: वह जोर जोर से प्रार्थना करता था और जोर जोर से गीत गाता था। वह कुछ ज्यादा ही ''शोर मचाता'' था जिसके हम अपनी कलीसिया में आदी नहीं थे। आरम्भ में हम यह कहते थे, कि ''यह क्या हुआ चाहता है'', जैसा कि प्रेरित 2 में पिन्तेकुस्त के दिन लोग कह रहे थे, परन्तु बाद में यह आनन्द हमारे लिए ऐसी आशीष बन गई जो हमारी सभाओं में फैलने लगी और हमें हर्षित करने लगी। अपना गुजारा करने के लिए जोस के पास बहुत कम था, परन्तु उसके जीवन में कृतज्ञता, आनन्द, ढाढ़स बहुतायत में थे जिन्हें वह उदारता से हर रविवार भाइयों और बहनों के बीच बाँटता था। जोस अपनी कविताओं की पुस्तकों को बेचता है, और इससे मिलने वाली आय से वह इक्वाडोर में गुजारा करता है और अपने विश्वास के अपने जीवन और गवाही को लोगों को बाँटता है और उसके जीवन में आने वाली हर एक विषम परिस्थिति में भी अपना भरोसा परमेश्वर पर बनाए रखता है।

– इग्लेसिया क्रिस्टियाना मेनोनिटा डे क्विटो, इक्वाडोर

गीत कायम है: हाँडुरस के गिरोह के इलाके में आशा

20 वर्ष से भी अधिक समय तक, हाँडुरस के सान पेड्रो सुला के पास कमेलेकोन में गिराहों के बीच टकराव होता रहा। मुख्य सड़कें एक अदृश्य सीमाओं का रूप ले लेती थीं, सड़क के दोनों ओर दो अलग अलग गिराहों का दबदबा हुआ करता था। यहाँ

मेनोनाइट चर्च विडा एन अबन्डेनशिया, हाँडुरस के पास्टर जोस फर्नांडिज।
फोटो: ऑस्कर सुरेज।

तक कि जो लोग इन गिरोहों में शामिल नहीं थे, उनके लिए भी सड़क के इस पार से उस पार जाना खतरनाक था। इस स्थान में विडा इन अबनडानशिया, मेनोनाइट चर्च स्थित है। 2008 में, इस मण्डली को बुलाहट मिली कि बच्चों को इन गिरोहों के प्रभाव से बचाने के लिए एक प्राथमिक स्कूल की स्थापना की जाए। किन्तु, हिंसा बढ़ती गई। पुलिस और गिरोहों के बीच स्कूल के सामने ही मुठभेड़ होती रही और एक बार तो कक्षाएं आरम्भ होने से ठीक पहले स्कूल के भीतर ही मुठभेड़ हो गई। 2013 में, शिक्षकों और छात्रों पर खतरा इतना बढ़ गया कि स्कूल को बन्द करना पड़ा। स्कूल के 38 छात्रों का दूसरे स्थान के अन्य स्कूलों में दाखिला करवाना पड़ा और इसलिए बच्चों के साथ परिवार के अन्य लोगों को भी यह कलीसिया छोड़ दूसरे स्थान को जाना पड़ा।

समुदाय में व्याप्त इस भय के वातावरण में और अपने छोटे आकार के बाद भी मण्डली आशा का सन्देश फैलाने के लिए प्रतिबद्ध थी। स्कूल के लिए कुछ कर पाने में असफल हो जाने के बाद, शेष सदस्य कलीसिया भवन की सुरक्षित सीमा को लाँघ कर आसपास के हर कोने में गतिविधियाँ संचालित करने लगे, और ''परमेश्वर के संगीत'' को हथियारों की आवाजों पर प्रबल करने लगे।

गिरोह का अगुवा जो उस इलाके को नियंत्रित कर रहा था गीत सुन कर पासवान को ढूंढ़ने लगा। थोड़ी घबराहट के बाद, पास्टर जोस फर्नांडेज गिरोह के उस सरदार के पास गए और उसे बताया कि वे ही वह व्यक्ति हैं जिन्हें वह ढूँढ़ रहा है। गिरोह के सरदार ने अपने आदमियों को निर्देश दिया, ''इस पासवान को कोई हाथ नहीं लगाएगा।'' यह वह क्षण था जिसने कलीसिया की प्रतिबद्धता को और मजबूती प्रदान की। धीरे धीरे, युवा लोग हिंसा और द्वेष के उस संसार के आतंक से भाग कर कलीसिया में आने लगे।

आशा फिर से प्रबल होने लगी। लोग वापस लौटने लगे। पिछले वर्ष, स्कूल फिर से खुल गया। एक मिशन कार्यक्रम के तहत किशोरों को तैयार किया गया है और वे भी समुदाय में अपना योगदान दे रहे हैं।

एक छोटी सी कलीसिया जो कठिनाई के मध्य भी स्थिर बनी रही अब फूलती फलती जा रही है, और हिंसा की आवाज को दबाने के लिए आशा के एक गीत के धुन पर तुरही फूंक रही है।

– लैटिन अमरीका के लिए याब्स कमेटी सदस्य, ऑस्कर सुरेज के द्वारा जैसा बताया गया।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

समावेशी पहुनाई की सेवकाई

पवित्रशास्त्र का एक स्थल: ''देख, तेरी बहिन सदोम का अधर्म यह था, कि वह अपनी पुत्रियों सहित घमण्ड करती, पेट भर भर के खाती, और सुख चैन से रहती थी: और दीन दरिद्र को न संभालती थी'' (यहेजकेल 16:49)।

एक कहानी: एक शरणार्थी ने कड़ुवाहट में परमेश्वर से शिकायत की क्योंकि कलीसिया के लोगों ने उसे कलीसिया में आने नहीं दिया गया था। परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया: ''निराश न हो। उन्होंने मुझे भी नहीं आने दिया।''

इस बाइबल स्थल और इस छोटी सी कहानी को आधार बना कर, मैं अपने स्वयं की व्यक्तिगत गवाही से यह एक साधारण लेख लिख रहा हूँ।

कोलम्बिया, जहाँ मैं वर्तमान में निवास कर रहा हूँ, अमरीका महाद्वीपों में एकमात्र ऐसा देश है जो आज भी एक ऐसे गृह युद्ध के विनाशकारी प्रभावों को झेल रहा है जो 60 वर्षों तक चला। इस गृहयुद्ध में 2,00,000 से भी अधिक लोग हिंसा में मारे गए, 82,000 लोग लापता हो गए, 50, 00, 000 लोग बेघर हो गए, और 60, 00, 000 से अधिक लोग किसी न किसी रूप में पीड़ित हुए (नेशनल सेन्टर फॉर हिस्टोरिकल मेमोरी से मिले आँकड़े; यह एक सरकारी संस्था है जो पीड़ितों और भूमि मुआवजा के लिए बनाए गए राष्ट्रीय कानून से सम्बन्धित सारी जानकारियों के लिए जिम्मेदार है)। यद्यपि भूतपूर्व गौरिल्ला समूह *एफएआरसी* और राष्ट्रीय सरकार के बीच एक शान्ति समझौता सम्भव हो सका, इसे लागू करने की और लगभग 10,00,000 वेननजुएला शरणार्थियों को अपनाने की तैयारी करने की चुनौती आज भी कायम है। यह हमारा एक पड़ोसी देश है जो एक सामाजिक आर्थिक संकट का सामना कर रहा है।

धमकियाँ और अनिश्चितता

बगोटा में अनेक वर्षों तक निवास करने के बाद, 1986 में, मेरी पत्नी, हमारे बच्चे और मैं कैरेबियाई क्षेत्र में देश के उत्तरी भाग स्थित सान जोसिन्टो के एक छोटे से शहर में आ गए।

यहाँ पर हमने एक खेत, एक घर, कुछ कृषि उपकरण और वाहन खरीदा, और अपनी पत्नी और चार छोटे बेटों के साथ, यहाँ रहने लगे और मैं कानूनी वकालत के पेश के साथ साथ कृषि कार्य और पत्रकारिता भी करने लगा। हमने इस क्षेत्र के कृषकों के सामाजिक और मूलभूत कार्यों में सहयोग किया।

स्थानीय कृषकों के साथ मेरे कार्य के कारण, मुझ पर यह दोष लगाया गया कि मैं गौरिल्ला विचारधारा का समर्थन करने वाला व्यक्ति हूँ। स्थानीय पुलिस कमांडर, और

वेननजुएला से पलायन कर आए शरणार्थियों को
इग्लेसिया मेनोनिटा रियोहाचा, कोलम्बिया में स्वीकार किया गया।
फोटो: इग्लेसिया मेनोनिटा डे रियोहाचा

इसके बाद एक अर्धसैनिक बल जिसे ''अपहरणकर्ता को मौत'' नाम दिया गया था (गौरिल्लाओं को अपहरणकर्ता कहा गया है) मुझे सताने लगे और मुझे उनकी ओर से लगातार धमकियाँ मिलने लगीं।

मार्च 1988 में, कोलम्बियाई राष्ट्रीय सेना और पुलिस ने साथ मिलकर हमारे घर पर छापा मारा। हमें जान से मारने की धमकियाँ मिलने लगी। हमारे मित्र हमसे दूर होने लगे। बैंक हमारा सहयोग नहीं कर रही थी। यहाँ जीवन व्यतीत करना असहनीय हो चुका था। जान से मारने की धमकियों के कारण हम पास के शहर कार्टागेना में जा कर रहने को बाध्य हो गए, और जो कुछ अब तक हमने परिश्रम कर कमाया था उसे खो दिया।

कार्टागेना में मेरे एक अंकल ने हमें अपनाया, हमारी पहुनाई की, और अपना घर हमारे लिए खोल दिया। इस तूफान से गुजरते हुए मेनोनाइट चर्च के सहयोग से हमने उनके आँगन में अपने रहने के लिए एक स्थान का निर्माण किया।

परन्तु एक विस्थापित व्यक्ति की स्थिति, चाहे वह अपने देश में ही हो, या विदेश में, काफी कठिन होती है। हमें अपना स्थान, अपने मित्र, अपने परिवार के सदस्य, अपनी नौकरी, अपना समान, अपनी संस्कृति, अपने सम्पर्क, और अपनी प्रतिष्ठा को छोड़ना

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

पड़ता है। इसके अतिरिक्त, हम एक अंजान स्थान में प्रवेश करते हैं, जहाँ आप पर जोखिम बना रहता है और कोई आपको स्वीकार नहीं करता; हम अपने आप को एक ऐसे संसार में पाते हैं जिसके मन में हमारे प्रति पूर्वाग्रह भरा हुआ है और जो हमें संदिग्ध समझता है।

कभी हमें धर्मी समझा जाता था, अब अचानक हम पर आतंकवादी या अपराधी होने का संदेह किया जाता है, इससे हमारे पड़ोसियों में भय छा जाता है। हम भय के वातावरण में प्रवेश कर जाते हैं, सिर्फ विस्थापित हो जाने के कारण नहीं, परन्तु अपने चारो ओर के लोगों के कारण – आपके मित्र, सम्बन्धी, और कलीसिया – सब के मन में यह डर समा जाता है कि उन्हें गलत समझा जाएगा या शत्रु मान लिया जाएगा और वे खतरे में पड़ जाएंगे और उन्हें नुकसान झेलना पड़ सकता है।

दूसरों के मन में छा जाने वाला भय ही विस्थापित व्यक्ति को सबसे अधिक प्रभावित करता है क्योंकि यह इन्हें पंगु बना देता है और आपकी सुधि लेने और आपके साथ समानुभूति दिखाने में उन्हें बाधित करता है। अनेक लोग आपकी सुधि लेना चाहते हैं, परन्तु उनके भी परिवार हैं, छोटे बच्चे हैं, उन कर्ज और उधार है, और वे अपने जीवनों को जोखिम में और उन पर निर्भर रहने वालों के भविष्य को खतरे में डालना नहीं चाहते। वे कहते हैं, कि यदि वे अकेले होते, तो हमारी सहायता के लिए अपनी जान भी दे देते, परन्तु इन परिस्थितियों में, ऐसा करना गैरजिम्मेदाराना होगा और यह उनके बच्चों के साथ अन्याय होगा।

जुलाई 1989 में, हम एक बार फिर बगोटा पहुँचे, हम थक चुके थे, परन्तु पराजित नहीं हुए थे। चार बच्चों के साथ एक विस्थापित दम्पत्ति जिसे डराया धमकाया जा रहा हो। हम आतंक से ग्रस्त एक शहर में आए थे, जो हर एक चौक में भीख मांगते जीवित मुर्दों से भरा हुआ था, बालक और बालिकाओं को गलियाँ में अकेले छोड़ दिया गया था, वे अपराध का शिकार बन सकते थे; वे एक ऐसे क्षेत्र से घिरे हुए थे जहाँ नस्लवाद और भेदभाव करने वाली निर्धनता हावी थे।

केन्द्रीय सरकार युद्ध का हवाला दे कर अधिकांश नागरिक अधिकारों का दमन कर रही थी और हर दिन नगर में व देश भर में छापा मारने और नजरबंदी का मनमाना आदेश जारी कर रही थी। नगर में अविश्वास और भय का वातावरण था। एक प्राचीन चीनी रणनीतिकार ने कहा है, ''युद्ध छल की एक कला है,'' इसके आगे जोड़ते हुए अमरीकी राजनैतिज्ञ हिराम जॉनसन ने कहा है, ''जिसका पहला शिकार सत्य है।'' ये बातें किसी पर भी विश्वास कर पाना कठिन बना देती है, यहाँ तक कि परमेश्वर पर भी।

कोस्टारिका में विश्व सहभागिता रविवार 2018 मनाया गया और सारापिक्यू में एक संयुक्त आराधना सभा का आयोजन किया गया।
फोटो: एसोसिएशियन इग्लेशियास क्रिस्टियानास मेनोनिटास डे कोस्टा रिका।

आश्रय और स्वागत

किन्तु, पास्टर पीटर स्टकी की कलीसिया तेइयूसाक्विल्लो (बगोटा) मेनोनाइट चर्च के सदस्यों के एक समूह के द्वारा उठाए गए एक ठोस कदम के कारण मैं और मेरा परिवार आज जीवित हैं और इसके लिए मैं उनका धन्यवादी हूँ। यद्यपि उन पर भी छोटे छोटे बच्चों और अन्य लोगों की जिम्मेदारी थी, वे इस भय पर, कि उन्हें बदनाम किया जा सकता है या गोरिल्ला समूह का समर्थक माना जा सकता है, प्रबल हो कर सामने आए। उन्होंने अपने आप को संगठित किया कि हमारी सुधि लें जिससे हमें आश्रय मिला और हमें इतनी उर्जा मिली कि हम पुनः खड़े होने और स्थापित होने के लिए अपनी शक्ति को जगा सकें।

जब हम पहुनाई (सुधि लेने) के इन कार्यों को अपने जीवन में साकार करते हैं तभी सदोम पर लगे शाप से छुटकारा पाते हैं और यीशु मसीह का यह सुन्दर वाक्यांश एक वास्तविकता बन जाता है: ''क्योंकि मैं भूखा था,और तुमने मुझे खाने को दिया; मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया . . . मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया'' (मत्ती 25:35–40)।

परन्तु कलीसिया के एक सदस्य–परिवार को सहायता देने के बाद वे यही रूक नहीं गए। समावेशी पहुनाई का विस्तार हुआ। किसी को भी छोड़ा नहीं गया और परदेशियों, यात्रियों और पीड़ितों के लिए हमेशा ही स्थान सुरक्षित रखा गया। समावेशी पहुनाई ने कलीसिया के द्वारों को खोल दिया और कलीसियाई सेवकाई को इस तरह से रूप दिया गया जिससे कि सैकड़ों विस्थापितों को सहारा दिया जा सके जो अपनी सारी सम्पत्ति और अपनी आशा को खो देने के बाद अपने अपने मूलस्थानों से भाग आएं हैं। ''शरणार्थी (या विस्थापित) दुदर्शा का एक जीता जागता दूत होता है, और

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

एमबीसी कोर्कोडिया में आराधना सभा के दौरान, यह वेरेइनिगुंग डेर मेनोनाइटेन ब्रुडर गेमिनडेन पैरागुए का एक अंग है। फोटो: मैनुएल एक्कर्ट

अपने साथ युद्ध की त्रासदी, नरसंहार, कत्लेआम और हिंसा के कारण अपने अपने घरों से बेघर हो जाने की गंध ले कर आता है।'' (जेवियर जुराडो, अरजाय एसोसिएशन – तत्वज्ञान के विद्यार्थियों की एक पहल – के सदस्य)।

अनेक वर्षों तक, तियसाक्विल्लो मेनोनाइट कलीसिया की यह सेवकाई बगोटा में सक्रिय है। सैकड़ों लोगों की सहायता की जा चुकी है और उन्हें शान्ति मिली हैं। यहाँ से, दर्जनों विस्थापित लोगों को कनाडियन मेनोनाइट चर्च के द्वारा प्रयोजित किया गया है और आज वे इस देश में एक नए और शान्त जीवन का आनन्द ले रहे हैं। इस सेवकाई का इक्वाडोर के क्विटो नगर में भी विस्तार हुआ, जहाँ देश से भाग कर शरण ढूंढ़ रहे सैकड़ों कोलम्बियाई लोगों को स्वीकार किया जा रहा है।

इस प्रकार की सेवकाई – जिसमें किसी भी व्यक्ति को ग्रहण किया जाता है, चाहे वह कहीं से भी आया हो, उसका विश्वास चाहे कुछ भी हो, उसकी राजनैतिक विचारधारा चाहे कुछ भी हो, वह गौरिल्ला दलों को सताया हुआ हो या अर्धसैनिक बलों का – को आरम्भ करना, इसके लिए पहल करना, और इसे जारी रखना एक बहुत बड़ा जोखिम होता है। कभी कभी तो, मण्डली के सदस्य चर्च आना बन्द कर देते हैं। किन्तु, हम इस बात पर पूर्ण विश्वास करते हैं कि यीशु के आदेश और आश्रय पाने के अधिकार के बीच पूरा पूरा मेल है। समुदाय सशक्त होता जाता है और नए अगुवे आगे आ कर अपने आप को पहुनाई के लिए समर्पित करते हैं।

एक ऐतिहासिक, ऐनाबैपटिस्ट शान्ति की कलीसिया के रूप में सेवा करना प्रसन्नता की बात है, जहाँ कोई भी शरणार्थी परमेश्वर से शिकायत नहीं करेगा कि उसे वहाँ प्रवेश करने नहीं दिया गया, और हम यह अय्यूब के समान यह कह सकते हैं, ''परदेशी को सड़क पर टिकना न पड़ता था; मैं बटोही के लिए अपना द्वार खुला रखता था'' (अय्यूब 31:32)।

– रिकार्डो इस्किविया बालेस्टास एक वकील और कोलम्बियाई मेनोनाइट चर्च के सदस्य हैं, उन्हें समुदाय और कलीसिया में शान्ति स्थापना का कार्य करने का 45 वर्ष का अनुभव है। वे सेमब्रॉडोपाज (शान्ति का बीज बोना) के निदेशक हैं और कोलम्बियाई कैरेबियन में लौटे हुए समुदायों के बीच कार्य करते हैं।

इस लेख का एक संस्करण पहली बार अप्रेल 2016 की कूरियर पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

लैटिन अमरीका संस्कृति से सम्बन्धित कुछ सुझाव

* अनेक लैटिन अमरीकी मण्डलियों में आराधना के दौरान पूरी मण्डली को अवसर दिया जाता है कि वे किसी एक गीत को गाते समय अपने स्थानों से उठ कर एक दूसरे के पास जाएं और एक दूसरे का अभिवादन करें। अक्सर विश्वास के समुदाय से सम्बन्धित गीतों को इस समय गाया जाता है। यह आराधना के दौरान एक सुन्दर क्षण होता है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने स्थान से उठ कर दूसरों के पास जा जा कर हाथ मिलाता और गले मिलता है। अक्सर इस गीत से पहले कलीसिया में आए हुए बाहर के लोगों का स्वागत किया जाता है ताकि प्रत्येक सदस्य गीत के दौरान उनके पास जा कर उनका स्वागत कर सके।

* कभी कभी शास्त्रपठन के दौरान आराधना का संचालन करने वाला पासबान या अगुवा पवित्रशास्त्र स्थल से एक पद को पढ़ता है, और फिर अगला पद मण्डली ऊँचे स्वर में पढ़ती है (उत्तरवादी पाठ की तरह)। वे पूरे स्थल से एक एक पद को अपनी अपनी पारी में इसी से पढ़ते जाते हैं।

* अनेक मण्डलियों में प्रत्येक रविवार को समय दिया जाता है कि लोग अपनी गवाही दें। जो भी चाहे, उसे अवसर दिया जाता है कि वह अपनी गवाही को सामने रखे कि बीते सप्ताह में परमेश्वर ने उसके जीवन में किस तरह से कार्य किया है, या प्रार्थना निवेदन को सामने रखे। जब लोग यह गवाही देते हैं कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाओं को सुना है और किस तरह से परमेश्वर उनके जीवन में रह कर छोटे या बड़े रूप में कार्य कर रहा है, तो यह सुनना अत्यंत उत्साहजनक होता है।

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

विश्व सहभागिता रविवार

समूह अध्ययन या सण्डे स्कूल के लिए कुछ सुझाव

* कलीसिया के सदस्यों से कहें कि वे अपने परिवार के पलायन के इतिहास की खोजबीन करें और सब को बताएं और उनके परिवार के इस इतिहास में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता के जो चिन्ह दिखाई देते हैं उन्हें पहचान सब लोगों के सामने गवाही दें।

* जो लोग सेवा/नौकरी करने और सुसमाचार सुनाने के लिए अन्य स्थानों में चले गए हैं, उनसे कहें कि वे अपने अनुभव में बताएं।

* लोगों को अवसर दें कि वे इस बात को स्मरण करें कि पिछले कुछ दिनों या महीनों में उनकी मुलाकात अन्य देशों या अन्य स्थानों से आए हुए लोगों से सड़कों, बसों, ट्रेनों या उनके कार्यक्षेत्रों में हुई है, अपनी इन मुलाकातों के विषय में कुछ बातों को बताएं।

* किसी अन्य स्थान या अन्य देश/प्रदेश के व्यक्ति को आमंत्रित करें कि वह अपने बारे में बताए कि किस तरह से एक शरणार्थी (या बाहर से आए हुए व्यक्ति) के रूप में उसे सहायता मिली कि वह अपने आप को स्थानीय संस्कृति में ढाल सके। उनके सामने आने वाली सबसे बड़ी चुनौतियाँ क्या हैं?

* चर्च भवन में एक झाँकी तैयार करें जिसमें उस लम्बे और दर्दनाक पथ को दर्शाएं जिस पर एक शरणार्थी सुरक्षा की तलाश में आगे बढ़ता है। अवरोधों

दियोलाल रामदियाल चार्लिविले मेनोनाइट समुदाय, त्रिनिदाद के बच्चों को अवकाशकालीन बाइबल शाला में शिक्षा देते हुए।
फोटो: गलेन लेहमन

काँफ्रेंसिया पेरुआना हेर्मानोस मेनोनिटा कलीसिया के एक कार्यक्रम के अवसर पर भोजन तैयार करती हुई। फोटो: हेंक स्टेनवर्सह्रद्ध

से भरा एक मार्ग तैयार करें, जिसमें चेतावनी, समन, तस्वीर, समाचार पत्र, पद चिन्ह, पुराने जूते, बड़े बड़े थैले/सूटकेस, बच्चों की चादरों को इस तरह से जमा कर रखें कि पलायन करने वालों के सामने आने वाली चुनौतियों को दर्शाया जा सकें।

* इस मार्ग में कुछ प्रश्नों को भी चिपका कर रखें। अन्त में लोगों को आमंत्रित करें कि वे अपने विचारों को प्रस्तुत करें और इस पर कदम उठाने के लिए अपने संकल्प को सामने रखें। छोटे छोटे कार्ड पर इन संकल्पों को लिख कर इसे दीवार/बोर्ड, या किसी बड़े पेपर पर चस्पा करें।

* तस्वीरों और चार्ट का प्रयोग करते हुए पलायन करने वालों के अनुभव की भयावहता और जटिलता को दर्शाएं।

* आपके समुदाय/कलीसिया में पलायन कर आए परिवार (चाहे कुछ ही समय पहले आए हों या काफी पहले, दोनों) जिन स्थानों से आएं हैं, वहाँ के विशेष पकवान तैयार कर सकते हैं। आराधना में आए सभी लोगों को आमंत्रित करे कि वे एक समय के भोजन के बराबर की राशि एमडब्ल्यूसी की सेवाओं के लिए भेंट करें।